विनोबा जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

बृजेश कुमार पाण्डेय*

विनोबा जी ने अपने समय की शिक्षा से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर गहन चिंतन किया और उनके समाधान के लिए जो सुझाव दिये वे वर्तमान की शैक्षिक उलझनों को सुलझाने में भी कारगर प्रतीत होते हैं। विनोबा जी का संपूर्ण चिन्तन और समग्र जीवन नैतिकता पर आधारित है। विनोबा के सर्वोदय, ऐसे वर्ग विहीन, जाति विहीन और शोषण विहीन समाज की स्थापना करना चाहते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास के साधन और अवसर मिलेंगे। विनोबा जी के अनुसार शिक्षा एक आंतरिक प्रक्रिया है बाह्य ज्ञान नहीं। शिक्षा का उद्देश्य बालक का व्यक्तिक, सामाजिक, प्राकृतिक, आध्यात्मिक तथा आर्थिक स्वावलम्बन होना चाहिए। विनोबा जी के अनुसार शिक्षा सरकारी तंत्र से मुक्त होनी चाहिए। शिक्षक सत्ता के पीछे न भागकर अपनी शक्ति का विकास करे। विनोबा की नई तालीम का आध्यात्मिक पहलू यह है कि ज्ञान और कर्म दो चीज़ें नहीं, बल्कि एक चीज़ है। विनोबा जी की दृष्टि में शिक्षा की सबसे बड़ी कमज़ोरी यह है कि इससे नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहन नहीं मिलता। यों तो विनोबा जी ने शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार किया परंतु यहाँ उनमें से कुछ का उल्लेख इस आशय से किया गया है जिससे इस बात का अनुभव किया जा सके कि उन्होंने शिक्षा पर जो चितंन किया वह उनके समय के साथ-साथ आज के समय की शैक्षिक समस्याओं का परिचय कराता है और उनके समाधान के लिए सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

शिक्षा की प्रक्रिया युग सापेक्ष होती है। युग की गति और उसके नये-नये परिवर्तनों के आधार पर प्रत्येक युग में शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य के साथ ही उसका स्वरूप भी बदल जाता है। यह मानव इतिहास की सच्चाई है। मानव के विकास के लिए खुलते नित नये

* *वरिष्ठ प्रवक्ता*-शिक्षाशास्त्र विभाग, संत विनोबा पी.जी. कालेज, देवरिया (उ.प्र.)

आयाम शिक्षा और शिक्षाविदों के लिए चुनौती का कार्य करते हैं, जिसके अनुरूप ही शिक्षा की नयी परिवर्तित रूपरेखा की आवश्यकता होती है।

शिक्षा की एक बहुत बड़ी भूमिका यह भी है कि वह अपनी जाति, धर्म, संस्कृति तथा इतिहास को अक्षुण्ण बनाये रखे, जिससे राष्ट्र का गौरवशाली अतीत भावी पीढ़ी के समक्ष द्योतित हो सके और युवा पीढ़ी अपने अतीत से कटकर न रह जाए।

शिक्षा समाज का दर्पण है और इस नाते समाज की आशा और आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करना शिक्षा का कर्त्तव्य ही नहीं, अनिवार्यता भी हो जाती है। शिक्षा राष्ट्र का वह दृश्य है जिसके निस्पन्द होने पर राष्ट्र जीवन बिखर जाता है। मानव का जीवन से घनिष्ठ संबंध होता है, जीवन के बहुमुखी विकास में शिक्षा की महती भूमिका है। शिक्षा और दर्शन का आधारभूत संबंध होता है। शिक्षा दार्शनिक सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है। दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष है।

बीसवीं सदी की प्रथम दशाब्दी के आरंभिक वर्षों में भारतीय राजनीति का रंग बदल रहा था। किन्तु विगत साक्ष्यों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि परतंत्रता की लंबी अवधि के बाद जो कुछ हुआ, वह आश्चर्यजनक था। भारत में अंग्रेज़ों के शासन का फन्दा ज्यों-ज्यों दृढ़ होता जा रहा था त्यों-त्यों भारत में रविन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानन्द, गाँधी जी, लोकमान्य तिलक, महर्षि दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, संत विनोबा भावे जैसी प्रतिभायें विकसित होती जा रही थीं, जिन्होंने अपने-अपने ढंग से देश को आजाद कराने में सतत् प्रयास किया।

आधुनिक भारत के महान संत, दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारक, भूदान आन्दोलन के प्रणेता और सर्वोदय के अग्रदूत आचार्य विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 को महाराष्ट्र के गागोदा नामक ग्राम के सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। विनोबा जी इस युग के महापुरुष हैं, फिर भी हम उनके बारे में बहुत कम जानते हैं क्योंकि वे एक मूक सेवक रहे हैं। उन्होंने न तो स्वयं आगे आकर दुनिया की नजरों में पद और यश प्राप्त करने का प्रयास किया ओर न ही अपने भक्तों और शिष्यों को करने दिया। विनोबा जी जीवन को एक पानी की धारा मानते हैं जो समुद्र (परमात्मा) से मिलने जा रही है उनके शब्दों में-

> *''यदि इस धारा से पूछा जाए कि तेरी क्या इच्छा है, तो वह उत्तर देगी- मैं तो समुद्र की ओर जा रही थी रास्ते में यह गढ्ढा आ गया और मैंने इसे भरने की कोशिश की, यदि इसमें मेरा जीवन समाप्त हो जाय तो कोई बात नहीं। मैं अपने को इसी में कृतकृत्य मानती हूँ।''*

इस धारा की तरह ही विनोबा जी आजीवन अपने आस-पास की बुराइयों, विषमताओं, सामाजिक व धार्मिक भेदभावों और कमियों

को मिटाते हुए आगे बढ़ने का प्रयत्न बिना किसी लालच या स्वार्थ पूर्ति के करते रहे।

गाँधी जी के उत्सर्ग के बाद विनोबा जी मैदान में आये। उसके पहले वह कीर्ति से कोसों दूर भागते थे। जब व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए सन् 1940 में बापू ने उन्हें प्रथम सत्याग्रही के रूप में चुना तो लोग पूछते थे, यह विनोबा कौन है? तब बापू को उनके विषय में एक लेख लिखना पड़ा था। विनोबा की प्रतिभा बहुमुखी थी। वह संत, ज्ञानी, चिंतक, विद्वान, लेखक, शिक्षाशास्त्री, भाषाविद् (वे अठारह भाषाएँ जानते थे।) थे। 'गीता प्रवचन' उनकी अमर कृति है। गीता का उनके जीवन में क्या स्थान रहा है, इसका उल्लेख करते हुए विनोबा कहते हैं–

> *''गीता का और मेरा संबंध तर्क से परे है, मेरा शरीर माता के दूध पर जितना पला है, उससे कहीं अधिक मेरा हृदय और बुद्धि, दोनों गीता माता के दूध से पोषित हुए हैं। जहाँ ऐसा संबंध होता है, वहाँ तर्क की गुंजाइश नहीं होती है। तर्क को काटकर श्रद्धा और प्रयोग के दोनों पंखों से मैं गीता–गगन में उड़ान भरता हूँ। मैं प्राय: गीता के ही वातावरण में रहता हूँ। गीता को मेरा प्राण तत्व समझिए। जब मैं गीता के संबंध में किसी से बात करता हूँ तो मानो गीता के गहरे समुद्र में गोता मार कर बैठ जाता हूँ। गीता का मुझ पर अनन्त उपकार है।''*

सर्वोदय योजना

संत विनोबा के आध्यात्मिक विचार उनकी सर्वोदय क्रान्ति की आधारभूमि का निर्माण करते हैं। विनोबा का संपूर्ण चिन्तन और समग्र जीवन नैतिकता पर आधारित है। विनोबा के लिए नैतिक मूल्य जीवन की सबसे बड़ी निधि हैं। विनोबा जीवन में सबके प्रति मैत्री व्यवहार के आकांक्षी थे, उन्हें मित्र–शून्यता का विचार पसंद नहीं था। स्नेह के परित्याग का अर्थ है शुष्क हृदय बनाना। यदि हम सबकी ओर स्नेह और मैत्री की दृष्टि से देखेंगे तो बदले में दूसरे भी हमें उसी दृष्टि से देखेंगे। नैतिक मूल्यों में प्रगाढ़ निष्ठा रखने का स्वाभाविक अर्थ है– सत्य और अहिंसा में निष्ठा रखना। सत्य और अहिंसा विनोबा के संपूर्ण दर्शन का आधार है। विनोबा जी के शब्दों में–

> *''जैसे विस्फोट होने पर अणु अपार शक्ति का निर्माण कर सकता है, वैसे ही हर क्रान्ति का आरंभ व्यक्ति में होता है, यदि आप उससे शक्ति पा सके।''*

सर्वोदय का सीधा सरल अर्थ 'सबका उदय' है पर एक विचार के रूप इसके अर्थ बहुत गहरे हैं। गाँधी जी रस्किन की पुस्तक *Unto the last* से बड़े प्रभावित हुए थे। इस पुस्तक ने उनकी इस भावना को दृढ़ किया था कि सबकी भलाई में ही अपनी भलाई है, सबको आजीविका का समान अधिकार है, सभी कामों की कीमत एक ही होनी चाहिए। सर्वोदय की विशेषता

उसकी समन्वयात्मक प्रवृति है। सर्वोदय ऐसे वर्ग विहीन, जाति विहीन और शोषण विहीन समाज की स्थापना करना चाहता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास के साधन और अवसर मिलेंगे। यह क्रांति अहिंसा और सत्य द्वारा ही संभव है सर्वोदय इसी का प्रतिपादन करता है। सर्वोदय में आत्मनिर्भरता निहित है। सर्वोदय के माध्यम से विनोबा जी एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे, जिसमें सत्य, अहिंसा और पारस्परिक प्रेम भाव हो, जिसमें एक व्यक्ति किसी दूसरे का शोषण न करे, अपितु वह सहयोग और समानता की भावना से परस्पर मिले। इस समाज में सभी को विकास के समान अवसर मिलें, किसी जाति, वर्ग या धर्म को मानने वाले व्यक्ति की उपेक्षा नहीं हो और इस समाज का परम लक्ष्य हो सबका अधिकतम हित। प्राचीन भारतीय दर्शन के सार 'जियो और जीने दो' को इन्होंने नया आयाम प्रदान करते हुए कहा कि ''तुम दूसरों को जीवित रखने के लिए जियो।'' सत्य में विश्वास सर्वोदय की प्राण शक्ति है सर्वोदय समाज की कल्पना क्या है? मैं सब में हूँ और मुझमें सभी। इसलिए मैं अपने निजी जीवन, व्यापार, व्यवसाय, सामाजिक जीवन में और हर जगह असत्य का व्यवहार नहीं कर सकता हूँ। विनोबा के अनुसार– सर्वोदय क्रांति की प्रक्रिया त्रिकोणात्मक है और यह त्रिभुज हृदय परिवर्तन, विचार परिवर्तन तथा परिस्थिति परिवर्तन की तीन रेखाओं से बनता है। इसका अर्थ है कि कुछ लोग तो विचार समझ जाने पर अपना जीवन बदल देते हैं, कुछ के हृदय पर असर डालना पड़ता है, और शेष परिस्थितियों से विवश होकर अपना जीवन बदलते हैं। इस प्रकार पूरा समाज बदल जाता है।

सर्वोदय हमें तुच्छ स्वार्थों से ऊपर उठने, समन्वयकारी प्रवृत्ति का विकास करने का उपदेश देता है। यह एक ऊँचे लक्ष्य की ओर संकेत करता है यह बताता है कि मानव समाज के कल्याण के लिए हमें परिवार, स्वजन, ग्राम, नगर, जाति, धर्म, राष्ट्र आदि की संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर कार्य करना होगा। भारत में अनेक धर्म, जातियाँ, भाषाएँ और पंथ हैं। लोग कहते हैं कि यह कैसी अजीब खिचड़ी है लेकिन विनोबा जी कहते हैं यह खिचड़ी नहीं वट वृक्ष है। रविन्द्रनाथ टैगोर तो इसे महासागर कहते हैं। महासागर में जिस प्रकार अनंत लहरें उठती हैं, उसी प्रकार यहाँ पर भी अनेक मानव समाज आंदोलन करते रहते हैं।

सत्याग्रह का आशय

विनोबा के सत्याग्रह का आशय था, सत्य के साथ लगे रहना। सत्य हमारे जीवन का आधार होना चाहिए। सत्य के लिए जीना और मरना चाहिए। सत्य का अनुसरण करने के लिए पर्याप्त साहस और धैर्य की आवश्यकता होती है। सर्वोदय व्यक्तिगत और राष्ट्रीय जीवन की भाँति अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी सत्य और

अंहिसा के उपयोग का समर्थक है। संत विनोबा ने जय हिन्द के स्थान पर जय जगत का नारा दिया।

शिक्षा, पाठ्यक्रम और पाठशाला

विनोबा जी के अनुसार शिक्षा एक आन्तरिक प्रक्रिया है बाह्य ज्ञान नहीं। बालक को शिक्षा संस्कारों से दी जानी चाहिए। विनोबा के अनुसार विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा और वातावरण बाह्य होता है इसलिए वह बाह्य शिक्षा है। इस शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का सामान्य विकास संभव है। सर्वोदय शिक्षा में प्रकृति और समाज के समन्वय को महत्व दिया गया है। विनोबा जी के अनुसार आज की विचित्र शिक्षा पद्धति के कारण जीवन के दो टुकड़े हो जाते हैं। आयु के पहले पंद्रह-बीस बरसों में आदमी जीने के झंझट में न पड़कर सिर्फ़ शिक्षा प्राप्त करे और बाद में शिक्षण को बस्ते में लपेटकर मरने तक जीये। यह रीति प्रकृति की योजना के विरुद्ध है।

सर्वोदयी योजना में गाँधी जी के दर्शन का पूर्णतः अनुसरण किया गया है, विनोबा जी कहते थे कि भारत में एक ऐसे समाज की रचना हो जिसमें सामाजिक और आर्थिक समानता हो, समाज अपने श्रम से कुटीर उद्योग की सहायता से विकसित हो। विनोबा जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक के वैयक्तिक विकास, सामाजिक विकास, आर्थिक स्वावलम्बन, प्राकृतिक विकास तथा अध्यात्मिक विकास होना चाहिए।

पाठ्यक्रम की दृष्टि से विनोबा प्रयोगवादी दार्शनिकों की श्रेणी में आते हैं, उनका विचार था कि पाठ्यक्रम का निर्धारण बहुत पहले से नहीं कर लेना चाहिए, क्योंकि आवश्यकतायें समय और परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं और उपयुक्त पाठ्यक्रम वह है जो उन आवश्यकताओं को पूरा करे। सामान्यतः उनका दृष्टिकोण शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का था जैसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक। विनोबा जी ने गाँधी जी की वर्धा शिक्षा योजना के पाठ्यक्रमों को लागू करने का समर्थन किया है, जिसका केंद्र बिंदु शिल्प है जो बालकों को आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम है।

वर्तमान शिक्षा का अर्थ लिया जाता है पढ़ना-लिखना और कुर्सी पर बैठकर हुक्म चलाना। आज जो दृश्य है उसमें विद्या सीखने का अर्थ है काम न करना। भगवान ने सबको हाथ और बुद्धि दोनों दिये हैं इसलिए जो विद्वान हो वो कर्मनिष्ठ भी हो और जो कर्मनिष्ठ हो, वो विद्वान भी हो। इस तरह से ज्ञान और कर्म, विद्या और परिश्रम दोनों अगर जुड़ जायेंगे तो देश की उन्नित होगी। आज भारत का दुर्भाग्य यह है कि यहाँ ज्ञान और कर्म के बीच मेल जोल नहीं रहा। काम करने वाले के पास ज्ञान नहीं पहुँचता और जिनका बौद्धिक विकास हुआ है वे काम नहीं करना चाहते। वर्तमान शिक्षा से व्यावहारिक ज्ञान नहीं मिलता उसका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है। आज तो विद्यार्थी, विद्यार्थी नहीं रहे, वे परीक्षार्थी हो गये

हैं उन्हें तैंतीस प्रतिशत अंकों पर उत्तीर्ण कर दिया जाता है। वास्तव में ज्ञान तो शत–प्रतिशत होना चाहिए। आज ज्ञान नहीं दिया जा रहा है। केवल जानकारी दी जा रही है।

विनोबा जी कहते हैं कि मैं आज की शिक्षा से बेहद असंतुष्ट हूँ। आज जगह–जगह पाठशालाएँ खुल रही हैं मगर मुझे ये सब प्राणहीन दिखायी देती हैं। इन पाठशालाओं में थोड़ा–सा अक्षर ज्ञान मिल जाता है, पर जीवनोपयोगी ज्ञान नहीं मिलता। वर्तमान शिक्षा की यह विडंबना है कि जिस छात्र को मैट्रिक तक पढ़ने को मिल जाता है वह श्रम की प्रतिष्ठा खो बैठता है। जहाँ गुरु–शिष्य भाव नहीं है, त्याग या सेवावृत्ति का नामोनिशां नहीं है, नैतिक वातावरण नहीं है, मातृभाषा के प्रति सम्मान नहीं है, श्रम की कोई कीमत नहीं है और स्वतंत्र विचारों का कोई मूल्य नहीं है, ऐसी शिक्षा निर्थरक है।

अंग्रेज़ों ने भारत में जो शिक्षा पद्धति चलायी, वह अपने स्वार्थ को साधने के लिए चलायी, उस पद्धति में त्रिदोष दिखते हैं जो कफ–वात–पित्त के प्रकोप जैसे भयानक हैं। आज की शिक्षा आराम से, आराम में, आराम के लिए ही दी जा रही है। पंडित नेहरु ने कहा कि आराम हराम है तो मानना पडेगा कि जो तालीम दी जा रही है वह भी हराम है।

आजकल प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा की कल्पनाएँ परीक्षाओं के साथ जोड़ दी गयी हैं। शिक्षा जीवन से अलग करके नहीं दी जा सकती, जीवन से उसकी शुरुआत होती है, जीवन जीते हुए ही वह प्राप्त की जा सकती है। शरीर–विकास के साथ बुद्धि–विकास यह प्राथमिक शिक्षा है, शरीर धारण के साथ बुद्धि विकास यह माध्यमिक शिक्षा है और विवेक–वैराग्य से शरीर और बुद्धि को अलग कर, शरीर निरपेक्ष रहकर बुद्धि विकास, यह उच्च शिक्षा है।

विनोबा भावे बताते हैं कि 15 अगस्त 1947 स्वतंत्रता का दिन था। मुझे वर्धा शहर में व्याख्यान के लिए बुलाया गया था। मैंने पूछा कि देखो भाई, स्वराज मिल गया है। क्या पुराना झण्डा एक दिन के लिए भी चलेगा? तो लोग बोले 'नहीं चलेगा' अगर पुराना झण्डा चला तो उस का अर्थ होगा कि पुराना राज्य जारी है। जैसे नये राज्य में नया झण्डा होता है, वैसे नये राज्य में नयी तालीम चाहिए। गाँधी जी ने नई तालीम नाम की एक पद्धति सुझायी। सरदार वल्लभ भाई पटेल स्वराज के बाद अपने भाषण में यही कहते रहते थे कि आज का यह किताबी शिक्षण बिलकुल निकम्मा है इतना ही नहीं बल्कि हानिकारक है। जिसके हाथों में राष्ट्र हो वही नेता जब ऐसा बोलता है तो सहज ही कोई पूछेगा कि "अगर आप के मत में प्रचलित शिक्षण पद्धति इतनी रद्दी है, तो आप उसे बदल क्यों नहीं देते?" उसके उत्तर में उन्होंने कहा था कि "हम सब लोग ऐसे जाल में फँसे हैं कि अब उसमें से निकलना मुश्किल हो रहा है।"

भारत को आजाद हुए कितने वर्ष हो गये हैं, अब हमें सूझता है कि शिक्षा का

रिओरिएन्टेशन होना चाहिए। शिक्षा में संशोधन के लिए कई कमीशन बने और उसकी रिपोर्ट सरकार के पास वैसी पड़ी रही और कुछ संशोधन हुए भी लेकिन आजतक शिक्षा के ढाँचे में कोई बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ। शिक्षा को ग्रामाभिमुख करना होगा। भारत के गाँवों में विज्ञान पहुँचाना होगा। विद्यार्थियों को गाँवों का अध्ययन करना होगा। विद्यार्थियों की ज्ञानशक्ति और गाँवों की श्रमशक्ति का समन्वय करना पड़ेगा।

शिक्षा में परिवर्तन की दिशा में सबसे पहले विनोबा जी के मन में यह प्रश्न आता है, जो शिक्षा के मूल पर प्रहार करने वाला है, वह यह कि शिक्षा सरकारी तंत्र से मुक्त होनी चाहिए। शिक्षा पर सरकार का कोई वरदहस्त नहीं होना चाहिए। शिक्षकों को सरकार वेतन अवश्य दे, वह सरकार का कर्त्तव्य है। परंतु जैसे न्याय विभाग स्वतंत्र है और सुप्रीम कोर्ट में सरकार के खिलाफ़ भी फैसले दिये जा सकते हैं और दिये गये हैं वैसे ही शिक्षा विभाग भी सरकार से स्वतंत्र होना चाहिए।

परंतु शिक्षा विभाग की स्वायत्तता को सच्चे अर्थ में उपलब्ध एवं कार्यान्वित करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक सत्ता के पीछे न भाग कर स्वयं अपनी शक्ति का विकास करें। इसलिए शिक्षकों को सत्ता पक्ष की राजनीति से मुक्त होकर जनता के संपर्क में रहना होगा। वास्तव में ज्ञान क्षेत्र में आजादी होनी चाहिए। आज की शिक्षा बदलनी होगी और शिक्षा में ब्रह्मविद्या और उद्योग, दोनों बातें शामिल करनी होंगी। ब्रह्मविद्या से आत्मा की पहचान होगी। शरीर, मन और इन्द्रियों पर काबू रहेगा। सारी दुनिया के प्रति प्रेम पैदा होगा। विनोबा जी की शिक्षा में हर विद्यार्थी काम करेगा और स्वावलम्बी बनेगा। हर विद्यार्थी उत्तम रसोई बनायेगा, सब विद्यार्थी खेत में मेहनत करेंगे। आज इतना आलस्य फैला हुआ है कि सारे उद्योग खत्म हो रहे हैं। अच्छे उद्योग करने वाले लोग चाहिए जिनका अभाव है।

आज के विद्यार्थियों में विद्या है, परंतु प्रकाश नहीं, आत्मविश्वास नहीं। आज की शिक्षा प्राणहीन है। आज की शिक्षा में मूल्य ज़रूर हैं, परंतु जब तक आत्मविश्वास प्रकट न हो तब तक विद्या का अन्य कोई मूलभूत मूल्य नहीं है। जैसे अपनी आँखें अमूल्य हैं, परंतु जब तक शरीर में प्राण है तब तक।

सन् 1937 में स्वराज प्राप्ति के दस वर्ष पहले, बापू ने नयी तालीम की कल्पना देश के सामने रखी। नित्य नयी तालीम का अर्थ है जो कल थी, वह आज नहीं और जो आज है, वह कल नहीं रहेगी, जैसे नदी का पानी। नदी बहती रहती है, लेकिन प्रतिक्षण उसका पानी नया होता है। नयी तालीम में नये मूल्यों की स्थापना।

आज के समाज में शारीरिक परिश्रम और मानसिक परिश्रम की कीमत अलग-अलग मानी गयी है, जिसे नयी तालीम नहीं मानती। नयी तालीम के अनुसार मनुष्य जो भी सेवा करता हो शारीरिक या मानसिक वह एक नैतिक वस्तु है और उसे जो वेतन दिया जाता है, वह एक आर्थिक वस्तु है।

नयी तालीम का आध्यात्मिक पहलू यह है कि ज्ञान और कर्म दो चीजें नहीं, बल्कि एक ही चीज है। ज्ञान से कर्म श्रेष्ठ या कर्म से ज्ञान श्रेष्ठ कहना गलत है। ज्ञान और कर्म एक है, इस बुनियाद पर जो तालीम दी जायेगी, वह नयी तालीम है। नई तालीम में इंसान-इंसान में कोई सामाजिक अन्तर नहीं है। आज के समाज का ढाँचा अनेक प्रकार के भेदों पर खड़ा है। अंग्रेज़ जिस हालात में भारत आये और आगे उन्होंने उस हालत में फ़र्क करके जो नयी रचना बनायी उस हालत में समाज विद्यमान नहीं था। एक-एक गाँव में समाज टूट रहा था। जहाँ छूत-अछूत आदि भेद मौजूद हों, वहाँ ग्राम समाज बन ही नहीं सकता।

आज की शिक्षा का परिणाम यह है कि हम अपनी आँखों से देखते नहीं, दूसरे की आँखें से देखते हैं। हम दूसरे देशों में जाने की हिम्मत नहीं करते, अपनी आँखों से वहाँ का ज्ञान हासिल करने की हिम्मत नहीं करते और दूसरे देशों का वर्णन करने वाली एक आधा अंग्रेज़ी किताब पढ़ लेते हैं और घर बैठे हमको ज्ञान हुआ, ऐसा मान लेते हैं। इस तरह से जो कुछ ज्ञान हासिल करते हैं उसके बल पर विद्वान कहे जाते हैं।

विनोबा एक शिक्षक थे, यह कहना गलत नहीं है। पर विनोबा एक विद्यार्थी थे यह कहना अधिक ठीक होगा। विनोबा जी का विचार था कि बेसिक शिक्षा लागू करने के लिए सबसे पहले मानसिकता में परिवर्तन की आवश्यकता है। यह शिक्षा श्रम पर आधारित है जब तक लोगों में शारीरिक श्रम के प्रति आदर का भाव उत्पन्न नहीं होगा तब तक इसकी सफलता संदेहास्पद है।

विनोबा जी की दृष्टि में वर्तमान शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी कमज़ोरी यह है कि इससे नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहन नहीं मिलता। जब तक शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण नहीं होगा तब तक हमारा समाज वर्तमान सोचनीय स्थिति से निजात नहीं पा सकेगा। विनोबा ने शिक्षा की सार्थकता, उसके समाज सापेक्ष होने में मानते थे। इस बात पर बल देते थे कि शिक्षा और जीवन में किसी प्रकार से अन्तर नहीं होना चाहिए। विनोबा जी का चिन्तन था 'आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:' (दुनिया भर से मंगल विचार हमारे पास आये)। हम सब विचारों का स्वागत करते हैं। शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी को केंद्र बिंदु में रखते हुए गुरु की भूमिका और महत्ता पर विशेष बल दिया है। गुरु को शिक्षक से अलग करके देखा है। आज की शिक्षा का जो संकट है, उनमें तमाम कारणों में से एक कारण यह है कि समाज में गुरु का लोप हो रहा है। हमारे यहाँ आचार्य देवो भव कहा जाता है। विनोबा जी ने मातृभाषा को बड़े सम्मान के साथ देखा और कहा– अपनी भाषा में शिक्षा पाना जन्म सिद्ध अधिकार है।

यों तो विनोबा ने शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है परंतु यहाँ उनमें से कुछ का उल्लेख इस आशय से किया गया है जिसमें इस बात का अनुभव किया जा सके

कि उन्होंने शिक्षा पर जो चितंन किया वह, उनके समय के साथ-साथ आज के समय की शैक्षिक समस्याओं का परिचय कराता है और उनके समाधान के लिए सुझाव भी प्रस्तुत करता है। इस रूप में उनके विचारों की सार्थकता तथा प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। यदि हम संत विनोबा जी के शैक्षिक विचारों से जुड़े बिंदुओं को ध्यान में रखें और उनके अनुरूप कार्य करें तो वर्तमान समय की बहुत सी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है जिनका दूरगामी सकारात्मक परिणाम सामने आयेगा।

संत विनोबा ने अपने समय की शिक्षा से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर गहन चिंतन किया और उनके समाधान के लिए जो सुझाव दिये वे वर्तमान की शैक्षिक उलझनों को सुलझाने में भी कारगर प्रतीत होते हैं। इस तरह से उनके शैक्षिक विचारों को प्रासंगिक कहा जा सकता है।

सन्दर्भ

देशपाण्डेय, निर्मला. 1997. *विनोबा*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली

धर्माधिकारी, दादा. 1958. *सर्वोदय दर्शन*, अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी

______ 1957. *भूदान आहरण*, अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी

______ 1956. *साम्य योग की राह पर*, अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी

पटवर्धन, अप्पा साहब. 1959. *शोषण मुक्ति और नव समाज*, अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी

मजूमदार, धीरेन्द्र. 1957. *भूदान गंगा*, अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी

मल्ल, पूरन. 2010. *मानवाधिकार, सामाजिक न्याय, और भारत का संविधान*, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर

विनोबा. 2010. *शिक्षण विचार*, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी

______ 2011. *गीता प्रवचन*, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी

सिंह, मनोज कुमार. 2008. *भारतीय राजनीतिक चिन्तक-विनोबा*, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली